2:46

TOP_PDF_18.10.2026_Reviced

तमिलनाडु की सांस्कृतिक विरासत पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव, संरक्षण की बढ़ी जरूरत

ए ओपन प्रेस संवाददाता



चेन्नई। तमिलनाडु की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पारंपरिक व्यापार और प्राचीन बंदरगाह आज भी राज्य की विशिष्ट पहचान बने हुए हैं। हालांकि, जलवायु परिवर्तन, तेजी से बढ़ते शहरीकरण और बदलती जीवनशैली के कारण ऐतिहासिक संसाधनों तथा पारंपरिक जीवन पद्धतियों के संरक्षण को चुनौती बढ़ रही है। ऐसे में विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन स्थापित करना आवश्यक हो गया है।

तमिलनाडु की सांस्कृतिक पहचान सदियों पहले, व्यापार, ऐतिहासिक घटनाओं, भगवद्गुरुम, कन्नकोन परंपरा और पारंपरिक हस्तशिल्प से जुड़ी है। पोंगल जैसे कृषि पर्व प्रकृति के प्रति आभार और किसानों के योगदान को दर्शाते हैं। इन परंपराओं को पुनर्जीवित रखने के लिए कुछ पीढ़ी को स्थानीय कला, भाषा और सांस्कृतिक मूल्यों से जोड़ना महत्वपूर्ण है।

राज्य की खाद्य संस्कृति में चावल, दाल, सब्जियां और छोटे अनाज प्रमुख स्थान रखते हैं। हालांकि, दोष, चावल और रागी जैसे व्यंजन आज भी पहचान हैं। रागी, कंबु और विलई जैसे पारंपरिक अनाजों को बढ़ावा देने से खेती विविधता के साथ स्थानीय कृषि की भी दीर्घकालिक सेवा संभव है।

पुलियो अरसा जा रहा है। बीते कुछ सालों में हेरल और अमेरिका जैसे जहरी हैं। इस जगह में हुई स्पेशियलिटी के पीछे के उद्देश्य इसे हुए सैन्य प्रबंधन वाहन यहां पहले से रेलवेस्टेशन की एक मिशाले का काम किया है।

कि वे रेलवेस्टेशन सीमा के पास हमारे निवासी को निवेदन करते का बहन कर रहा था। इस जगह जलवहां कर्मचारी ने अपने बयान में कहा कि उन्होंने दो लोगों के सहारे में एक को जलवाहन जाते नहीं। हालांकि वे मौके पर अधरा-तहरी नाव मई।

जलवाही ने कहा थी, जबकि सब इस हादसे में मृतकों की संख्या 14 बताई जा रही है। गंगाघ से सह मरीजों की हालत गंभीर होने और कृछ घायलों की भी जानकारी दी गई थी। अन्य यात्रियों को भी इलाज मुहैया कराया जा रहा है।

जतिन प्रताप सिंह के बिग बॉस में प्रवेश को लेकर चर्चा तेज, निजी कारणों से प्रस्ताव ठुकराने की खबर

2/8

ए ओपन प्रेस संवाददाता

नई दिल्ली। टीवी का चर्चित रियलिटी शो बिग बॉस एक बार फिर अपने नए सीजन को लेकर सुर्खियों में है। लोकप्रिय गुजराती एक्टर-कॉमेडियन जिन्हें बीच के 2014 सीजन से विशेष प्रसिद्धि मिली थी, के शो में शामिल होने की खबरें सामने आई हैं। हालांकि, इस संभावित भागीदारी को लेकर अब तक कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं की गई है।

सूत्रों के अनुसार, जतिन प्रताप सिंह को शो में शामिल होने का प्रस्ताव मिला था, लेकिन उन्होंने व्यक्तिगत कारणों का हवाला देते हुए इसे ठुकरा दिया। बताया जा रहा है कि उन्होंने अपने परिवार और निजी जीवन को प्राथमिकता देते हुए यह निर्णय लिया है। उनके करीबी सूत्रों का कहना है कि वे फिलहाल किसी लंबे रियलिटी शो का हिस्सा बनने के मूड में नहीं थे।



हालांकि, प्रशंसकों के बीच इस खबर को लेकर उत्सुकता साफ देखी जा रही है। सोशल मीडिया पर कई फैंस उम्मीद जता रहे हैं कि आगे चलकर वे किसी और शो में नजर आ सकते हैं। वहीं, कुछ लोगों ने उनके फैसले का समर्थन करते हुए कहा है कि हर किसी को अपनी प्राथमिकताएं तय करने का अधिकार है।

गौरतलब है कि जतिन प्रताप सिंह ने अपने करियर की शुरुआत छोटे पर्दे से की थी और धीरे-धीरे अपनी मेहनत और अलग अंदाज के दम पर दर्शकों के बीच अपनी खास पहचान बनाई। उनके फैसले पर अब उनके प्रशंसकों की निगाहें टिकी हुई हैं।

कोलकाता के दुर्गा पंडाल में भगदड़

19 लोगों की मौत





कोलकाता। कोलकाता के भीड़भाड़ वाले इलाके दुर्गा पूजा पंडाल में अचानक मचे भगदड़ में 19 लोगों की मौत हो गई। हादसे के समय बड़ी संख्या में श्रद्धालु पंडाल के पास मौजूद थे। बताया जा रहा है कि पूजा के दौरान बिजली की अस्थायी व्यवस्था में खराबी आने से कुछ देर के लिए अफरा-तफरी मच गई। इसी दौरान अचानक भगदड़ मच गई। चश्मदीदों के मुताबिक, घबराहट में लोग एक-दूसरे पर गिरने लगे और कई लोग कुचले गए। घायलों को तुरंत नजदीक के अस्पताल पहुंचाया गया, जहां कई लोगों की हालत गंभीर बताई जा रही है। मृतकों में महिलाएं और बच्चे भी शामिल हैं।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, पंडाल के प्रवेश और निकास द्वार पर भीड़ का दबाव अचानक बढ़ गया था। कई लोग गिर गए और उन्हें संभलने का मौका नहीं मिला। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस, दमकल और आपदा प्रबंधन दल मौके पर पहुंचे। अधिकारियों ने बताया कि राहत और बचाव कार्य करीब दो घंटे तक चला। घायलों को एसएसकेएम अस्पताल, आरजी कर मेडिकल कॉलेज और अन्य सरकारी अस्पतालों में भर्ती कराया गया है।

मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने हादसे पर गहरा दुख व्यक्त करते हुए मृतकों के परिजनों के लिए 5-5 लाख रुपये और घायलों के लिए आर्थिक सहायता की घोषणा की है। राज्य सरकार ने इस घटना की न्यायिक जांच के आदेश भी दिए हैं। पुलिस ने आयोजन समिति के कुछ सदस्यों से पूछताछ शुरू कर दी है। प्रशासन का कहना है कि जांच रिपोर्ट में दोषी पाए जाने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

पांच साल के प्रयासों के बाद अनंतपुरम में महिलाओं के लिए पहले गुलाबी शौचालय की शुरूआत



अनंतपुरम। आंध्र प्रदेश के अनंतपुरम में महिलाओं के लिए खास सुलभ शौचालय के निर्माण की आवश्यकता लंबे समय से महसूस की जा रही थी। यह खास पहलकदमी को स्वच्छता, निजता और सार्वजनिक सुविधाओं के दृष्टि कोण से बेहद जरूरी माना जा रहा है। महिलाओं के अनुकूल और सुरक्षित शौचालय की दिशा में शहर में यह पहला कदम है। इस अभियान का नेतृत्व दिव्यांग अनंतपुरम के समाजसेवी जी. अनिल कुमार ने किया। उन्होंने बताया कि कई महिलाओं, विशेषकर छात्राओं और कामकाजी महिलाओं को शहर के सार्वजनिक शौचालयों को असहजता महसूस होती थी। इसी को देखते हुए गुलाबी शौचालय की परिकल्पना की गई। इसमें महिला सुरक्षा गार्ड, सैनिटरी नैपकिन वेंडिंग मशीन और अलग तरह की सुविधाएं दी गई हैं।

अधिकारियों के अनुसार, इन शौचालयों में पानी की निरंतर आपूर्ति, सौर ऊर्जा से रोशनी और सीसीटीवी निगरानी की व्यवस्था की गई है। अनिल कुमार ने कहा कि शौचालय के रखरखाव की जिम्मेदारी स्थानीय महिला स्वयं सहायता समूहों को सौंपी गई है, ताकि इसे रोजगार से भी जोड़ा जा सके। उन्होंने कहा कि यह पहल केवल शुरुआत है और आने वाले दिनों में ऐसे और शौचालय बनाए जाएंगे।

अनिल कुमार के अनुसार, ज्यादातर पुरुषों शौचालय में जाते तभी लोगों और यात्रा आने वाले 2 साल में अधिक महिलाओं को लाभ मिल सकता है। यह सार्वजनिक शौचालय को आत्मनिर्भर बनाने की एक पहल है। इसमें सौर ऊर्जा से संचालित सुविधाएं, स्वचालन सेंसर और अन्य आवश्यक कार्यों के लिए अलग-अलग खर्चों का प्रावधान किया गया है। अधिकारियों का कहना है कि यदि इस मॉडल को सफलता मिलती है, तो अन्य नगर निकायों में भी इसी तरह के शौचालय बनाए जाएंगे।

शांतनु भट्टाचार्य की जीवन यात्रा: शिक्षा, प्रशासन और उपलब्धियों से बनाई अलग पहचान

ए ओपन प्रेस संवाददाता

नई दिल्ली। कोलकाता में जन्मे शांतनु भट्टाचार्य की जीवन यात्रा शिक्षा, सिविल सेवा में कार्य और प्रशासनिक जिम्मेदारियों से जुड़ी रही है। उनकी उपलब्धियों की चर्चा अक्सर उनके व्यक्तित्व की विशेषताओं के रूप में की जाती है।

शांतनु भट्टाचार्य का जन्म 1966 में हुआ। उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा कोलकाता में ही पूरी की और आगे चलकर उच्च शिक्षा के लिए दिल्ली का रुख किया। वर्ष 2015 में उन्हें प्रतिष्ठित सिविल सेवा परीक्षा उत्तीर्ण करने का अवसर मिला। इस परीक्षा में उन्होंने अखिल भारतीय स्तर पर 29 वां स्थान हासिल किया। इसके बाद उन्होंने भारतीय प्रशासनिक सेवा को अपना करियर चुना।

शांतनु भट्टाचार्य को उनके सहयोगी एक ऐसे अधिकारी के रूप में याद करते हैं, जो जटिल से जटिल परिस्थितियों में भी शांत और संयमित रहकर निर्णय लेते हैं। उनके करीबी लोगों का कहना है कि वे हमेशा टीम भावना को महत्व देते हैं और मानते हैं कि कोई भी बड़ा काम अकेले नहीं किया जा सकता। यही कारण है कि उनके साथ काम करने वाले लोग उन्हें एक भरोसेमंद साथी के रूप में देखते हैं।

अपने प्रशासनिक कार्यकाल के दौरान शांतनु भट्टाचार्य ने कई महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां संभालीं। उन्होंने जिला प्रशासन, शहरी विकास और सामाजिक कल्याण से जुड़ी योजनाओं को लागू करने में अहम भूमिका निभाई। उनके कार्यकाल में कई ऐसी पहलें शुरू की गईं, जिनका उद्देश्य आम लोगों तक सरकारी सुविधाओं को आसान और पारदर्शी तरीके से पहुंचाना था। उनके करीबी लोगों का कहना है कि वे फाइलों से ज्यादा लोगों से जुड़ने में विश्वास रखते हैं।

उनकी जीवन यात्रा से शिक्षा को भी प्रेरणा मिलती है। उन्होंने कई मौकों पर युवाओं से कहा है कि सफलता का कोई एक तय रास्ता नहीं होता। लगातार सीखने की आदत, धैर्य और सही दिशा में की गई मेहनत ही किसी व्यक्ति को लंबे सफर में आगे ले जाती है। उनका मानना है कि असफलता से घबराने के बजाय उससे सीख लेकर आगे बढ़ना ही असली जीत है।

श्रेयसी दास का समृद्धि संबंधी सिद्धांत: धन से आगे ज्ञान, उद्देश्य और जागरूकता पर जोर

ए ओपन प्रेस संवाददाता



नई दिल्ली। आज के समय में सफलता का दृष्टिकोण अक्सर धन, संपत्ति और आर्थिक उपलब्धियों के आधार पर किया जाता है। हालांकि, मनोविज्ञान अध्ययनों की समकालीन श्रेयसी दास समृद्धि की व्यापक दृष्टिकोण से देखने की आवश्यकता प्रस्तुत करती हैं। उनके सिद्धांत के अनुसार, वास्तविक संपन्नता केवल धन तक सीमित नहीं है, बल्कि ज्ञान, उद्देश्य, समय और संसाधनों के समुचित उपयोग से भी जुड़ी है। श्रेयसी दास की प्रस्तावित शोध परियन्त्रण के अनुसार, समृद्ध व्यक्ति वही व्यवहार प्रस्तुत करते हैं, जो उन्हें दीर्घकालिक संतुलन, संबंधों और संतुष्टि दिलाता है। इसके विपरीत, केवल धन पर अधिक ध्यान देने वाले लोग अक्सर तनाव, असंतोष और खोखलेपन का अनुभव करते हैं।

जागरूकता और व्यक्तिगत विकास

श्रेयसी दास की अवधारणा में आत्मचिंतन को अहम भूमिका बताई गई है। उनका कहना है कि व्यक्ति को समझने की प्रक्रिया को अपनाकर उसे अपनी ताकत, प्राथमिकताओं और जिंदगी में संतुलन में ले जाने में मदद मिलती है। उनकी शोध परियन्त्रण के अनुसार, जो लोग अपने लक्ष्यों और जीवन की दिशा पर विचार करते हैं, वे अक्सर अधिक संतुष्ट और स्थिर जीवन जीते हैं। इस दृष्टिकोण में समृद्धि को एक स्थिर उपलब्धि नहीं, बल्कि एक निरंतर चलने वाली यात्रा के रूप में देखा गया है।

उपलब्धियों और दावों की पुष्टि जरूरी

जानकारों का मानना है कि श्रेयसी दास का यह दृष्टिकोण ऐसे समय में महत्वपूर्ण है, जब सोशल मीडिया और तेज जीवनशैली के कारण लोग अक्सर तुलना और दिखावे के दबाव में आ जाते हैं। हालांकि, विशेषज्ञों का यह भी कहना है कि किसी भी शोध और उसके दावों को परखने के लिए उनकी पद्धति, नमूना आकार और निष्कर्षों की विस्तृत समीक्षा जरूरी होती है। ऐसे में श्रेयसी दास के शोध परियन्त्रण के प्रकाशन और उसकी समीक्षा पर सभी की नजर बनी हुई है।

बच्चों में मोबाइल की बढ़ती लत चिंता का विषय



नई दिल्ली। आज के डिजिटल युग में मोबाइल फोन हमारी जीवनशैली का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। ऑनलाइन पढ़ाई, मनोरंजन और खेलों के लिए इसका उपयोग बढ़ा है, लेकिन इसका दूसरा पहलू भी उतनी ही तेजी से सामने आ रहा है। बच्चों में मोबाइल की लत एक गंभीर चिंता का विषय बनती जा रही है। लगातार स्क्रीन टाइम के कारण बच्चों में चिड़चिड़ापन, नींद की कमी, एकाग्रता में कमी और शारीरिक गतिविधियों में कमी जैसी समस्याएं देखी जा रही हैं।

विशेषज्ञों के अनुसार, छोटे बच्चों का मस्तिष्क तेजी से विकास के चरण से गुजरता है। ऐसे में अधिक समय तक मोबाइल की स्क्रीन के संपर्क में रहने से उनकी सीखने की क्षमता और सामाजिक कौशल पर नकारात्मक असर पड़ सकता है। कई अभिभावक अनजाने में ही अपने बच्चों को शांत कराने के लिए मोबाइल थमा देते हैं, जो धीरे-धीरे एक आदत का रूप ले लेता है। इसके बाद बच्चे बिना स्क्रीन के असहज महसूस करने लगते हैं।

इस समस्या से निपटने के लिए माता-पिता को सबसे पहले खुद अपने स्क्रीन टाइम पर ध्यान देना होगा। बच्चों के सामने मोबाइल का कम उपयोग करना, परिवार के साथ समय बिताना और बच्चों को वैकल्पिक गतिविधियों जैसे खेल, पढ़ना और रचनात्मक कार्यों में व्यस्त रखना इस दिशा में प्रभावी कदम हो सकते हैं। इसके साथ ही स्कूलों में भी डिजिटल अनुशासन को लेकर जागरूकता बढ़ाने की जरूरत है।

मनजीत सिंह: पंजाबी सिनेमा में नई कहानियों और प्रतिभाओं को अवसर देने की पहल

ए ओपन प्रेस संवाददाता



चंडीगढ़। पंजाबी फिल्म जगत में अभिनय, संगीत, लेखन और सांस्कृतिक विरासत के जरिए देश-विदेश में विशिष्ट पहचान रखता है। इस क्षेत्र में फिल्म निर्माताओं को कुशल फैक्ट्री निर्माण और प्रचार के लिए एक मंच की जरूरत लंबे समय से महसूस की जा रही थी। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए हीरा लाल फिल्म प्रोडक्शन की स्थापना की गई है। कंपनी का उद्देश्य पंजाबी सिनेमा को वैश्विक स्तर पर एक नई पहचान दिलाना है।

हीरा लाल फिल्म प्रोडक्शन: फिल्म निर्माण और प्रचार के क्षेत्र में नई पहल

ए ओपन प्रेस संवाददाता



चंडीगढ़। राज्य प्रदेश में स्थित हीरा लाल समूह की ओर से पंजाबी फिल्म निर्माण और प्रचार के क्षेत्र में एक नई पहल की शुरुआत की गई है। कंपनी ने घोषणा की है कि वह पंजाबी फिल्मों के निर्माण, वितरण और प्रचार-प्रसार के लिए एक विशेष इकाई स्थापित करेगी। इस पहल का उद्देश्य उन प्रतिभाओं को मंच प्रदान करना है, जिन्हें अक्सर संसाधनों की कमी के कारण अपनी कहानियों को बड़े पर्दे तक पहुंचाने में कठिनाई होती है।

कंपनी के अधिकारियों के अनुसार, शुरुआती चरण में ऐसी फिल्मों को प्राथमिकता दी जाएगी जो सामाजिक मुद्दों, ग्रामीण जीवन और पंजाब की समृद्ध लोक परंपराओं को आधुनिक दृष्टिकोण के साथ प्रस्तुत करती हैं। इसके लिए नए लेखकों, निर्देशकों और तकनीशियनों को अवसर देने की बात कही गई है। हीरा लाल फिल्म प्रोडक्शन का मानना है कि कई अच्छी कहानियां केवल इसलिए अधूरी रह जाती हैं क्योंकि उन्हें बनाने के लिए आवश्यक वित्तीय सहायता उपलब्ध नहीं होती।

दुर्गा प्रतिमा विसर्जन पर 19 से 21 तक बदलेगी यातायात व्यवस्था

खेरिया मोड़ रेलवे पुल बंद होने से अर्जुन नगर-बाराखंबा [illegible]

Convert to PPT

The potential reach of a film increasingly depends on how effectively its story is communicated, how accessible its information is and how consistently its production team engages with audiences. A strong film identity, supported by accurate credits and professional publicity, can help a project stand out in a crowded entertainment environment.

Manjit Singh's association with New Indo Musical Company (NEW IMC) and J J Motion Picture provides a relevant context for considering these developments. The film posters and press material in his supplied portfolio demonstrate the role that visual promotion and public communication play in presenting Punjabi productions.

Digital Visibility Begins with a Clear Identity

A production company's online presence should make it straightforward for audiences to identify its projects, understand its role and find reliable information.

A well-organised digital profile can include:

- Verified production credits: Clearly identify the producer, production company, director and principal cast where confirmed.
- Project archives: Maintain a structured record of released films, posters, trailers and official announcements.
- Consistent branding: Use recognisable company names, logos and visual styles across authorised promotional materials.
- Audience engagement: Share behind-the-scenes information, interviews and production updates where permission has been obtained.
- Professional enquiries: Provide an appropriate contact channel for artists, collaborators, distributors and media representatives.

These measures are practical rather than extravagant. They help reduce confusion, improve discoverability and establish a more professional relationship between a production company and its audience.

Preserving Culture Through Storytelling

Punjabi cinema has a distinctive cultural vocabulary shaped by language, music, humour, family life, regional traditions and changing social realities. Its international appeal often begins with the authenticity of these elements.

Films rooted in a particular culture do not need to abandon their identity to attract a wider audience. On the contrary, specific characters, familiar social settings and recognisable emotional experiences can help stories connect with viewers who come from different backgrounds.

The challenge is to communicate that cultural richness effectively.

Subtitles, well-prepared trailers, accurate descriptions and professional promotional material can make a film easier to discover without diluting its original character.

The documented title Mission 2017: Halla Ho, whose promotional poster references drug abuse and political corruption, also illustrates how Punjabi films can engage with social subjects.

Entertainment can provide a setting in which audiences encounter questions about community life, public responsibility and social change. A varied regional film industry needs space for such subjects alongside comedy, romance, family drama, music-led entertainment and other genres.

That variety is one of its enduring strengths.

PROFILE DETAILS

- **Featured professional**: Manjit Singh
- **Production associations**: New Indo Musical Company (NEW IMC) and J J Motion Picture
- **Documented film titles**: Jatt Jugadi Hunday Nay, Dramebaaz Kalakaar and Mission 2017: Halla Ho
- **Instagram**: https://www.instagram.com/newimc1/

Protected by Copyright · Unauthorized Reproduction, Distribution or Resale Strictly Prohibited.

Every project contributes to this ecosystem by creating work, encouraging collaboration and adding to the range of stories available to viewers. Opportunities for emerging talent are especially important because the long-term development of an industry depends on the arrival of new performers and creative professionals.

A production company can help strengthen its identity by maintaining consistent branding, documenting its projects and communicating clearly with audiences. Film posters, press features, interviews and digital announcements are not merely promotional accessories; they form part of the public record through which viewers discover a production and understand its creative direction.

For NEW IMC and J J Motion Picture, an organised presentation of past projects and verified production credits can help audiences and industry contacts understand the company's work more easily.

The Importance of Collaboration

Filmmaking is a collective undertaking. A producer may help shape the overall direction of a project, but the final result depends on the contributions of many people working across different disciplines.

Actors bring characters to life. Directors establish the visual and dramatic approach. Writers develop the narrative. Cinematographers, editors, musicians and technical specialists help transform the material into a finished film. Publicity and distribution teams then connect the completed work with its intended audience.

Recognising this collaborative structure is essential to understanding the producer's role. The achievement of a film is rarely the result of one individual working alone; it emerges from the coordination of multiple skills and perspectives. Manjit Singh's documented association with Punjabi productions places his professional profile within this wider creative network.

Looking Beyond the Release

The life of a film does not necessarily end with its first release. Audience discussions, press coverage, music, digital discovery and subsequent distribution opportunities can extend the visibility of a production. Maintaining accurate film records and accessible promotional materials can therefore be valuable long after the initial campaign. For producers, this means treating each completed project as part of a continuing professional portfolio. Clear credits, organised archives and reliable online information help preserve a production's identity and make it easier for audiences to discover the work.

In a changing entertainment landscape, the ability to combine creative ambition with professional organisation remains an important part of building a lasting presence in cinema. For Manjit Singh and the production associations represented in his portfolio, the continuing opportunity lies in bringing creative teams together, presenting Punjabi stories effectively and contributing to the evolving landscape of regional entertainment.

FROM REGIONAL SCREENS TO GLOBAL AUDIENCES: THE NEXT OPPORTUNITY FOR PUNJABI CINEMA

A Changing Landscape for Punjabi Entertainment

The entertainment industry is experiencing a continuing shift in the ways audiences discover, discuss and watch films. Traditional cinema releases remain important, but digital platforms, social media, online publications and video-sharing services have created additional routes through which productions can attract attention.

For regional cinema, this transformation offers a significant opportunity. Punjabi-language films can connect not only with audiences in Punjab and other parts of India, but also with Punjabi-speaking communities and culturally curious viewers around the world.

Protected by Copyright · Unauthorized Reproduction, Distribution or Resale Strictly Prohibited.

LONDON HERALD



MANJIT SINGH

THE CREATIVE FORCE BEHIND PUNJABI FILMMAKING AND ENTERTAINMENT

The Producer's Perspective: Turning Ideas into Cinema

Every film begins with an idea, but transforming that idea into a finished production requires far more than imagination. It demands coordination, planning, financial discipline, creative collaboration and the determination to carry a project through its many stages. The producer occupies a central position in this process, connecting the ambitions of filmmakers with the practical realities of production and audience engagement.

For Manjit Singh, whose name is associated with New Indo Musical Company (NEW IMC) and J J Motion Picture, the available portfolio reflects involvement in Punjabi-language film projects and their promotion.

His documented work provides a window into the collaborative environment of regional filmmaking, where performers, directors, writers, technicians and production teams contribute to a shared creative objective.

Punjabi cinema has developed a distinctive identity through its combination of humour, music, drama, social observation and cultural expression. Its stories can reflect everyday life, celebrate community traditions and explore changing aspirations. Producers working within this environment help create the framework through which such stories are developed and presented to audiences.

Balancing Creativity with Production Discipline

A successful film project depends on the relationship between artistic vision and practical execution. Casting decisions, production schedules, location arrangements, technical requirements and promotional planning must work together. Delays or weaknesses in one area can affect the entire production.

This is particularly relevant to regional filmmaking, where teams often work with specific budgets and must carefully plan how resources are allocated. Producers help maintain communication between creative contributors and operational teams, ensuring that the project remains organised while allowing room for artistic expression.

The promotional material associated with Jatt Jugadi Hunday Nay, Dramebaaz Kalakaar and Mission 2017: Halla Ho illustrates the variety of projects represented in Manjit Singh's supplied portfolio. Each title has its own identity, presentation and intended relationship with audiences.

While individual films differ in subject and style, the production process behind them reflects a shared requirement: bringing people, ideas and resources together to create a coherent cinematic product.

Building a Strong Identity for Regional Cinema

Regional film industries depend on more than individual releases. They also rely on a broader ecosystem of artists, technicians, production companies, music professionals, distributors, exhibitors and media platforms.

Protected by Copyright · Unauthorized Reproduction, Distribution or Resale Strictly Prohibited.

CHIEF EDITOR - DR. AVINASH SAKUNDE

London HERALD

OCTOBER 2026

www.londonherald.org

SPECIAL EDITION - 146/2026



CINEMA
MUSIC
ENTERTAINMENT
CULTURE

MANJIT SINGH

Producer

NEW INDO MUSICAL COMPANY (NEW IMC) & J J MOTION PICTURE

CREATIVE
STORYTELLING
REGIONAL CINEMA
GLOBAL VISION

WASHINGTON POST

The documented material for Mission 2017: Halla Ho explicitly references issues such as drug abuse and political corruption. These themes illustrate how Punjabi-language filmmaking can engage with concerns that resonate beyond the immediate entertainment value of a production.

Films addressing social subjects must balance the demands of storytelling with the responsibility of presenting their themes effectively. When handled thoughtfully, cinema can open conversations, give visibility to lived experiences and encourage audiences to consider questions affecting their communities. At the same time, a diverse film industry needs room for comedy, drama, music-led entertainment and stories of everyday life. The strength of regional cinema lies partly in its ability to accommodate this variety while retaining a distinctive cultural voice.

The Next Chapter: Visibility in a Digital World

The entertainment industry continues to change as audiences discover films through social media, online video, digital publications and streaming services. These channels have expanded the ways in which producers can communicate with viewers, promote their work and maintain a connection with audiences beyond a theatrical release.

For production houses such as NEW IMC and J J Motion Picture, a clear digital identity can help organise film information, showcase previous projects and make announcements easier to discover.

An active social media presence can also provide a central point for sharing production updates, promotional material and official links.

The Instagram account supplied for this profile, @newimc1, offers a relevant starting point for readers seeking the company's online presence. Consistent branding, accurate film credits and well-organised project archives can further strengthen the connection between a production company and its audience.

Looking ahead, the wider opportunity for Punjabi cinema lies in combining its cultural foundations with thoughtful production planning and modern audience outreach. The goal is not to abandon established traditions, but to ensure that regional stories continue to find new viewers in a rapidly changing media environment.

A Continuing Contribution to Punjabi Entertainment

The work of a film producer is fundamentally collaborative. Every completed production represents the combined efforts of creative and technical professionals, supported by planning, organisation and a willingness to take on the challenges of bringing a story to the screen.

Manjit Singh's documented association with New Indo Musical Company and J J Motion Picture places him within this collaborative world of Punjabi filmmaking. The available portfolio offers a starting point for understanding his involvement in film production, publicity and entertainment initiatives.

WASHINGTON POST

A producer's contribution is measured not only by the films that reach the screen, but also by the creative possibilities that a production makes room for.

Editorial note: The film titles and production associations featured here are drawn from the supplied documents and available published coverage. The article does not imply that every title represents a current or ongoing production.

PRESERVING PUNJABI IDENTITY WHILE EMBRACING A CHANGING ENTERTAINMENT LANDSCAPE

From Film Production to Cultural Connection

Punjabi cinema occupies a distinctive place in India's entertainment landscape. Its stories draw on a rich cultural tradition shaped by language, music, humour, family relationships, social change and the experiences of Punjabi communities at home and abroad.

For production companies working in this space, the opportunity extends beyond releasing individual films: it includes helping Punjabi stories remain visible and accessible to successive generations of viewers.

The work associated with Manjit Singh and New Indo Musical Company reflects participation in this broader creative environment. Through film projects and entertainment-related initiatives documented in the supplied portfolio, his professional activities connect with the collaborative ecosystem that sustains regional cinema.

More Than a Film Poster

The history of a film is rarely told through a single source. Posters communicate the identity of a production; newspaper articles record aspects of its public reception and promotion; certification documents establish specific administrative details; and interviews can offer insight into the thinking behind a project.

The material supplied for this profile brings together these different forms of documentation. It includes publicity for Jatt Jugadi Hunday Nay, Dramebaaz Kalakaar and Mission 2017: Halla Ho, alongside newspaper coverage and a Central Board of Film Certification document relating to a Punjabi feature. This collection provides a record of the promotional and production activities associated with the projects. It also illustrates the importance of documentation in the entertainment business, where a production's identity develops through a combination of creative work, public communication and distribution. For independent producers, publicity is not simply an afterthought. It helps introduce a film to potential viewers, communicate its themes and create awareness before release. Newspaper coverage, interviews, promotional artwork and digital communication can all contribute to a project's public profile.

Entertainment and Social Themes

Popular cinema serves many purposes. It can entertain, encourage reflection, bring communities together and provide a platform for stories rooted in particular social experiences.

WASHINGTON POST

For emerging performers, an opportunity to appear in a film can become a valuable step towards professional development. For producers, supporting a new project involves coordinating creative ambitions with practical considerations, including production planning, promotion, distribution and audience engagement.

A Portfolio of Punjabi Film Projects

The available production material associated with NEW IMC documents several projects that illustrate the breadth of this work.

Jatt Jugadi Hunday Nay is one of the prominent titles in the collection. The film's promotional material presents an ensemble-led Punjabi entertainment production, while contemporary coverage discusses its cast and the production's emphasis on introducing fresh talent. The project demonstrates how casting, publicity and audience outreach come together in the launch of a regional film.

Another title, Dramebaaz Kalakaar, appears in the supplied portfolio through film posters and release-related promotional material. Its presentation reflects the importance of visual identity, publicity campaigns and the coordination required to bring a film to the marketplace.

Mission 2017: Halla Ho is also represented in the documentation. The film's poster identifies NEW IMC and Manjit Singh among the production credits and presents a socially themed Punjabi feature addressing subjects including drug abuse, political corruption and dirty politics.

The project illustrates how Punjabi cinema can engage with issues that extend beyond entertainment alone. These titles form part of the documented portfolio associated with Manjit Singh and his production activities. Each represents a different opportunity to bring performers, creative professionals and production teams together around a shared cinematic project.

The Work Behind Every Release

A film's public identity is often established through its poster, trailer, music and promotional campaign. Yet these visible elements represent only a portion of the work that takes place behind the scenes. Production requires communication between multiple contributors, attention to budgets and schedules, coordination of creative decisions and the organisation of a release strategy. Regional films must also compete for audience attention in a media environment where theatrical releases, television, digital platforms and social media increasingly overlap.

For an independent or regional production company, every project requires a combination of creative judgement, commercial planning and persistence. The producer's responsibility is to help connect these different elements while keeping the project moving towards completion. Manjit Singh's documented association with Punjabi film productions offers a useful perspective on this often underappreciated side of cinema. His work places the producer within a wider network of actors, directors, writers, technicians, distributors and publicity professionals whose combined efforts determine how a film reaches its audience.

WASHINGTON POST



MANJIT SINGH

BUILDING STORIES, CREATING OPPORTUNITIES AND CHAMPIONING PUNJABI CINEMA

Beyond the Camera: A Producer's Journey in Punjabi Entertainment

Cinema is more than a sequence of images on a screen. It is a medium through which cultures are represented, stories are shared and new creative voices find opportunities to connect with audiences. Behind every film lies the work of producers who help transform an idea into a complete cinematic experience. In Punjabi entertainment, producer Manjit Singh has been associated with projects that reflect the vibrancy, diversity and evolving ambitions of regional filmmaking.

As a producer associated with New Indo Musical Company (NEW IMC) and J J Motion Picture, Manjit Singh's work represents an engagement with the creative and practical dimensions of film production.

His documented projects span Punjabi cinema, entertainment programming and film promotion, illustrating the range of activities involved in bringing productions to audiences.

His professional journey is reflected in a collection of film posters, press coverage and production-related documents. Together, these materials provide a glimpse into a career shaped by the collaborative nature of filmmaking and the effort required to develop, present and promote stories for the screen.

Creating Opportunities for New Talent

One of the recurring challenges in regional cinema is finding the right balance between established audience expectations and fresh creative perspectives. New performers, emerging filmmakers and original story concepts need opportunities to reach viewers. Producers can play a significant role in creating the conditions in which such opportunities become possible.

An earlier interview published by PunjabDreamz discussed Manjit Singh's approach to Jatt Jugadi Hunday Nay.

The report highlighted his interest in supporting a project with a fresh cast and a different presentation, while also recognising the importance of a strong storyline in Punjabi filmmaking.

This approach reflects an important principle for the regional film industry: sustainable creative growth depends not only on familiar names but also on the willingness to explore new combinations of talent, storytelling and audience appeal.

SPECIAL EDITION - 130/2026

WASHINGTON POST

CHIEF EDITOR - DR. AVINASH SAKUNDE

CINEMA
MUSIC
CULTURE
INNOVATION



MANJIT SINGH

Producer

NEW INDO MUSICAL
COMPANY (NEW IMC)
& J J MOTION PICTURE

FILM
PRODUCTION
ENTERTAINMENT
CREATIVE VISION